

**परिचय** - यह एक ऋषि देवता की पालकी है। इसे कुल्लू, हिमाचल प्रदेश से 1996 में संग्रह किया गया है। हिमाचल प्रदेश को देव भूमि भी कहा जाता है। रथ निर्माण की प्रक्रिया वृहद है। सबसे पहले लकड़ी को कारपेंटर द्वारा नक्काशी किया जाता है, फिर धातु शिल्पकार द्वारा इस पर लगाये जाने वाले मुखौटे एवं छत्रों को बनाया जाता है। अन्ततः इसे गुलाबी या लाल रंग के कपड़े से ढक कर एक रूप दिया जाता है।

# ऋषि रथ

देवता की पालकी  
कुल्लू, हिमाचल प्रदेश से

आरोहण क्रमांक/Accession No.:  
96-1034



# Rishi Rath

Palanquine of God  
from Kullu, Himachal Pradesh

**INTRODUCTION** - This Rath palanquine is of Rishi God. It is collected from Kullu, Himachal Pradesh in the year 1996. Himachal Pradesh is known as the land of gods and goddesses and the deity culture is unique to the state. The process for preparing it is quite elaborate. First of all, the wooden part is carved out by the carpenter. The masks and the silver or copper "Chhatras" of the chariot are made by the metal craftsmen. Finally, it is covered by the red or pink cloth and the two rods are inserted at the bottom of the Rath to carry it from one place to another.

आकृति - आयताकार, लम्बाई/ऊँचाई- 160 से. मी. व चौड़ाई- 42 से. मी.  
Shape - Rectangle, Length/Height - 160 c.m., Breadth- 42 c.m

# कुल्लू घाटी में दशहरा पर्व का इतिहास/ History of Dusshera celebration in Kullu valley

रथ यात्रा निकालने की परम्परा कुल्लू के राजा जगत सिंह के राज में सन् 1637 से आरम्भ मानी जाती है। राजा को फुहारी बाबा के नाम से जाने जाने वाले संत ने राजा के असाध्य रोग के निदान हेतु सलाह दी कि, कुल्लू में भगवान रघुनाथ जी (अयोध्या के राजा राम) की प्रतिमा स्थापित करें। मूर्ति की स्थापना सन् 1659 में हुई व मूर्ति के चरणामृत सेवन से राजा धीरे-धीरे स्वस्थ व निरोग हो गये। अश्विन माह के पहले पंद्रह दिनों में राजा सभी देवी-देवताओं को ढालपुर घाटी में रघुनाथ जी के सम्मान में यज्ञ करने के लिये न्यौता देते हैं। इसके उपरांत ढालपुर में हिडिंबा देवी का प्रवेश होता है।



Kullu is world famous for its Dusshera celebration. It is celebrated every year in the month of October. The history of Dusshera celebration goes back to 17th century when the "Rath Yatra" was started under the rule of Raja Jagat Singh in 1637. The king was advised by a saint Fuhari Baba to establish an idol of Raghunath Ji to treat his incurable disease. The idol was established in 1659, and after having the idol's Charnamrit, he was cured. Since then, this tradition is continuing every year. The king invites all the Gods and Goddesses of his kingdom to the capital city of Kullu, fifteen days before the Ashwin month, to perform the Yagya in the honour of Raghunath Ji. Hidimba Devi (wife of Bheem) enters the Kullu district only after this Yagya.

# रथ यात्रा / Rath Yatra

कुल्लू घाटी में विजय दशमी के दिन देवताओं के रथ निकालकर दशहरा पर्व मनाने की परम्परा है। इस अवसर पर रघुनाथ जी, सीता, व हिडिंबा की प्रतिमा, को सजाकर ऋषि रथ में रखा जाता है। पहाड़ों से माता भेखली का आदेश मिलते ही रथ यात्रा आरंभ की जाती है। अलग-अलग स्थानों के देवी देवताओं की प्रतिमाओं को व्यास नदी तक रथ में लाकर उन्हें स्नान कराकर वापस ले जाया जाता है।



The Kullu Valley has a tradition of celebrating Dusshera by the display of the chariots of various Gods and Goddesses. On this occasion, the chariots are decorated with the idols of Raghunath Ji, Sita ji and Hidimba. The procession of the chariots starts its journey with the order of Bhekhli Mata from the mountains. The idols of different Gods and Goddesses are brought with the help of the chariots to the Vyas river where they are given a bath and taken back.